

डॉ. केविन ई. फ्रेडरिक, वाल्डेन्सियन, व्याख्यान 2, उद्देश्य का संश्लेषण, द अर्नोल्डिस्ट्स

© 2024 केविन फ्रेडरिक और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 2 है, उद्देश्य का संश्लेषण, अर्नोल्डिस्ट।

इस धर्मोपदेश का शीर्षक उद्देश्य का संश्लेषण है और यह पीटर वाल्डो के अनुयायियों से वाल्डेन्सियन आंदोलन और ब्रेशिया के अर्नोल्ड नामक एक व्यक्ति के अनुयायियों के बीच संबंध स्थापित करता है।

इसकी पृष्ठभूमि बताने के लिए, मैं प्रेरितों के काम 15 से पढ़ना चाहता हूँ। फिर, कुछ लोग यहूदिया से नीचे आए और भाइयों को सिखाया कि जब तक वे मूसा की रीति के अनुसार खतना नहीं करवा लेते, तब तक वे उद्धार नहीं पा सकते। पौलुस और बरनबास के बीच उनके साथ बहुत बड़ा मतभेद और बहस होने के बाद, पौलुस और बरनबास और कुछ अन्य लोगों को प्रेरितों और नेताओं के साथ इस प्रश्न पर चर्चा करने के लिए यरूशलेम जाने के लिए नियुक्त किया गया।

इसलिए, उन्हें चर्च द्वारा उनके मार्ग पर भेज दिया गया। और जब वे फीनीके और सामरिया दोनों से गुज़रे, तो उन्होंने अन्यजातियों के धर्म परिवर्तन की सूचना दी और सभी विश्वासियों को बहुत खुशी दी। जब वे यरूशलेम पहुँचे, तो चर्च, प्रेरितों और प्राचीनों ने उनका स्वागत किया।

उन्होंने बताया कि परमेश्वर ने उनके साथ क्या-क्या किया है। लेकिन फरीसियों के संप्रदाय के कुछ विश्वासी खड़े हुए और कहा कि उन्हें खतना करवाना और मूसा की व्यवस्था का पालन करना ज़रूरी है। प्रेरित और प्राचीन इस मामले पर विचार करने के लिए एकत्र हुए।

बहुत बहस होने के बाद पतरस ने खड़े होकर उनसे कहा, “हे मेरे भाइयो, तुम जानते हो कि परमेश्वर ने पहले के दिनों में तुम में से मुझे चुन लिया था कि अन्यजाति लोग सुसमाचार सुनकर विश्वासी बनें। और परमेश्वर ने जो मनुष्य के मन को जानता है, उन्हें भी हमारे समान पवित्र आत्मा देकर उनकी गवाही दी। और विश्वास के द्वारा उनके मनों को शुद्ध करके, उसने उनमें और हममें कोई भेद नहीं रखा।”

तो फिर तुम क्यों परमेश्वर की परीक्षा करते हो कि चेलों की गर्दन पर वह जूआ रखो जिसे न तो हमारे पूर्वज उठा सके और न हम? इसके विपरीत, हम विश्वास करते हैं कि हम प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह से उद्धार पाएँगे, ठीक वैसे ही जैसे वे पाएँगे। पूरी मण्डली चुप रही और बरनबास और पौलुस की बातें सुनने लगी जब वे उन सब चिन्हों और अद्भुत कामों का वर्णन कर रहे थे जो परमेश्वर ने उनके द्वारा अन्यजातियों के बीच किए थे।

जब वे बोल चुके, तो याकूब ने उत्तर दिया, “हे मेरे भाइयो, मेरी बात सुनो।” शिमोन ने बताया है कि कैसे परमेश्वर ने सबसे पहले अन्यजातियों पर कृपा की, ताकि उनमें से अपने नाम के लिए लोगों को चुन सके। यह भविष्यद्वक्ताओं के शब्दों से मेल खाता है, जैसा कि लिखा गया है।

इसके बाद मैं लौटकर दाऊद के उस निवास को जो उसके खण्डहर से गिर गया है, फिर से बनाऊंगा। मैं उसे फिर से बनाऊंगा, और उसे खड़ा करूंगा ताकि सब लोग यहोवा को देख सकें, यहां तक कि वे सब अन्यजाति भी जिन पर मेरा नाम रखा गया है। यहोवा जो इन बातों को बहुत समय से बताता आया है, यों कहता है।

इसलिए, मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि हमें उन अन्यजातियों को परेशान नहीं करना चाहिए जो परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं, लेकिन हमें उन्हें केवल मूर्तियों से अशुद्ध चीजों से, व्यभिचार से, और सभी प्रकार के गला घोंटे गए जानवरों से और खून से दूर रहने के लिए लिखना चाहिए। क्योंकि पिछली पीढ़ियों से हर शहर में मूसा के प्रचारक रहे हैं, क्योंकि वह हर सप्ताह के दिन आराधनालय में पढ़कर सुनाया जाता है।

यह प्रभु का वचन है। भगवान का धन्यवाद। मैं इस उपदेश की शुरुआत एक पृष्ठभूमि उद्घरण से करना चाहता हूँ।

सामंती व्यवस्था, अपने सबसे अत्याचारी पहलू में, 12वीं सदी के अंत में टूटने लगी, अपने भ्रष्टाचार के कारण कमजोर हो गई, चर्च और आम लोगों द्वारा इसके खिलाफ़ एकजुट होकर की गई लड़ाई, मठवाद के विकास और लगातार बढ़ते धर्मयुद्धों के कारण, जो यूरोप की कुलीनता के फूल को मार रहे थे, लोगों और शहरी जीवन का केंद्रीकरण, वाणिज्य का विकास, गणतंत्रीय शहरों की लोकतांत्रिक भावना, सामंती और चर्च अधिकारियों के खिलाफ़ आम लोगों और उनके प्रतिनिधियों की लड़ाई, देश से देश तक बड़ी सड़कों का खुलना, सड़कें जो रोमन साम्राज्य के समय से ही खस्ताहाल थीं, और सबसे बढ़कर, स्थानीय भाषा, लोगों की भाषा को अपनाना, लैटिन की जगह लेना, जिसका इस्तेमाल केवल विद्वानों द्वारा किया जाता था, उस समय की सामाजिक विशेषताएँ थीं। यह एनरिको सैंटोरियल नामक एक व्यक्ति द्वारा वाल्डेन्सियन के संक्षिप्त इतिहास से एक उद्घरण है। हमें विश्वास है कि हम प्रभु यीशु मसीह की कृपा से बचाए जाएँगे, प्रेरितों के काम 15.11। मसीह के शरीर के भीतर धार्मिक मतभेद और व्याख्या पर विवाद ईसाई समुदाय के पूरे इतिहास में मौजूद रहे हैं।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, हम पाते हैं कि पहला बड़ा विभाजन खतने की रस्म की भूमिका को लेकर हुआ था। अधिकांश यहूदी ईसाई मानते हैं कि पुरुष के खतने का शारीरिक संकेत, जो एक आवश्यक वाचा का कार्य था और पुरुष यहूदी विश्वासियों को चिह्नित करने वाला संकेत था, किसी भी गैर-यहूदी धर्मांतरित व्यक्ति या यहूदी धर्म के इस संकर का अनुयायी बनने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए एक आवश्यक कार्य था, जिसे बाद में ईसाई धर्म कहा गया। खतने की भूमिका पर विवाद करने वाले विश्वास के सार की एक वैकल्पिक व्याख्या दो शुरुआती चर्च नेताओं, पॉल और बरनबास द्वारा गैर-यहूदियों के लिए उनके मंत्रालय में समर्थित थी।

गैर-यहूदी शब्द का इस्तेमाल यहूदियों द्वारा किसी ऐसे व्यक्ति का वर्णन करने के लिए किया जाता था जो जन्म से या खतने के कारण यहूदी नहीं था। पौलुस ने खतने की यहूदी वाचा के अभ्यास के बजाय मसीह की कृपा पर ध्यान केंद्रित करके यीशु मसीह में विश्वास के धार्मिक सार को स्पष्ट किया। एक बड़ी बहस के बाद, जिसके दौरान एकत्रित हुए लोगों ने एक-दूसरे के तर्क

सुने और फिर ईश्वर की इच्छा को समझने के लिए हिब्रू शास्त्रों में पाई जाने वाली भविष्यवाणी की आवाज़ की अपील की, प्रारंभिक ईसाई समुदाय इस बात पर सहमत हुआ कि ईसाई शिष्यत्व के लिए शरीर का खतना आवश्यक नहीं था।

मसीह को प्रभु के रूप में मानना और मसीह के माध्यम से अनुग्रह का औचित्य सिद्ध करना शिष्य बनने के लिए दो प्राथमिक अनिवार्यताएँ थीं। इस घटना के बाद पॉल और बरनबास और अनुयायियों के एक छोटे समूह ने गैर-यहूदियों के लिए अपने मिशन को फिर से शुरू किया, संभावित धार्मिक मतभेदों को सुलझाया और यह ज्ञान प्राप्त किया कि वे और पीटर के नेतृत्व में यहूदी ईसाई धर्मांतरित लोग विश्वास में एकजुट हो गए हैं। 1170 के दशक के अंत में वाल्डो के अनुयायियों ने खुद को आत्मा में गरीब या लियोन में गरीब के रूप में संदर्भित करना शुरू कर दिया।

पहाड़ पर उपदेश, विशेष रूप से मैथ्यू 5.3 के उनके पढ़ने के आधार पर, उन्हें आमतौर पर लियोन के गरीब के रूप में जाना जाता था। लियोन के बिशप द्वारा सार्वजनिक रूप से प्रचार करने की प्रथा से इनकार किए जाने पर, वाल्डो ने 1179 में पोप अलेक्जेंडर III से सार्वजनिक सेटिंग में प्रचार करने की अनुमति के लिए अपील की। पोप वाल्डो की विनम्रता और भक्ति से प्रभावित हुए, लेकिन उन्होंने बिशप और उनके भौगोलिक अधिकार क्षेत्र को किसी भी समुदाय के भीतर मामले-दर-मामले के आधार पर प्रचार करने के अधिकार का निर्धारण करने के लिए टाल दिया।

लेकिन लियोन के बिशप ने वाल्डो और उसके अनुयायियों को उपदेश देने के अधिकार से वंचित कर दिया, जो 12वीं सदी के अंत में चर्च में बिशप का एक विशेष कार्य था। इतिहास के उस दौर में, स्थानीय पुजारी के कर्तव्यों में स्थानीय पैरिश के सात संस्कारों का संचालन करना और ईश्वर के वचन की घोषणा और व्याख्या के बिना उन संस्कारों के प्रशासन के इर्द-गिर्द पूजा करना शामिल था। उन दिनों आम लोगों के लिए कभी भी धर्मोपदेश सुनना दुर्लभ था, और तब भी, इसे केवल लैटिन में घोषित किया जाता था।

मध्ययुगीन कैथोलिक चर्च में बिशप के पद पर प्रचार की घोषणा एक बहुत ही कड़ी भूमिका थी। इस प्रतिबंध ने वाल्डो और उसके अनुयायियों को प्रचार करने से नहीं रोका, और 1184 तक, लियोन के गरीबों को स्थानीय भाषा में ईश्वर के वचन का प्रचार करने के लिए पोप लुसियस III द्वारा बहिष्कृत कर दिया गया। इसने वाल्डो और उसके अनुयायियों को यीशु के अभ्यास का अनुसरण करते हुए सुसमाचार का संदेश ले जाने के लिए स्वतंत्र कर दिया, जिन्होंने सुसमाचार फैलाने के लिए शिष्यों को जोड़े में भेजा था।

1180 के दशक के अंत में, वाल्डो और उनके यात्रा साथी ने मिलान के दक्षिण में लोम्बार्ड क्षेत्र में ईसाई धर्म के एक संप्रदाय की खोज की। वे खुद को लोम्बार्डों के गरीब कहते थे, लेकिन उन्हें अर्नोल्डिस्टी के नाम से भी जाना जाता था। लोम्बार्डों के गरीब वाल्डेंसियन की स्थापना से 40 साल पहले से थे और उनका नेतृत्व ब्रेशिया के अर्नोल्ड नामक व्यक्ति ने किया था। अर्नोल्ड के बारे में बोलते हुए, एनरिको साटोरियो लिखते हैं कि लोम्बार्डों में एक ऐसा व्यक्ति पैदा हुआ, जिसने

भविष्यवाणियों की आग के साथ प्रेरितों की पवित्रता और जीवन में गरीबी की वापसी का प्रचार किया।

वह व्यक्ति ब्रेशिया का अर्नोल्ड था, जो पीटर एबेलार्ड का छात्र था, जो अपने गुरु के रूप में धार्मिक विश्वासों पर चर्चा करने से संतुष्ट नहीं था, बल्कि अपने गुरु के तार्किक धार्मिक निष्कर्षों को जीवन में उतारता था। एक कर्मठ व्यक्ति जिसने अपने दिल के साथ-साथ अपने दिमाग से भी सत्य को महसूस किया, जिसने मसीह की स्वच्छ, शुद्ध लोकतांत्रिक भावना से प्रेरित जीवन का अभ्यास किया और दूसरों से भी करवाना चाहता था।" 12वीं सदी के यूरोप में रोमन कैथोलिक बिशपों के अपेक्षाकृत समृद्ध जीवन के कारण, बिशपों ने खुद को अपनी संपत्ति इकट्ठा करने और महल बनाने में व्यस्त कर लिया था। परिणामस्वरूप, समाज के सभी क्षेत्रों से चर्च के विरोध में आलोचना उठी।

अर्नोल्ड, जो पीटर एबेलार्ड के साथ अध्ययन करने के बाद रोमन चर्च में एक भिक्षु थे, ने रोमन पदानुक्रम से अपनी संपत्ति त्यागने और चर्च की अपनी भूमि को शहर-राज्य को वापस करने का आह्वान किया, जिससे चर्च और उसके नेताओं को धन की भ्रष्ट शक्ति से मुक्त किया जा सके। अर्नोल्ड ने चर्च के नेताओं से शिष्यत्व के शुद्ध रूप में लौटने का आग्रह किया। इस संदर्भ में, ब्रेशिया के अर्नोल्ड के उग्र शब्दों ने बड़ी संख्या में लोगों को राजनीतिक लाइनों के साथ लोकतांत्रिक सुधार करने और धार्मिक लाइनों के साथ नैतिक सुधार शुरू करने के उनके प्रयास में उनका अनुसरण करने के लिए तैयार किया।

इसने अर्नोल्ड को यह कट्टरपंथी विश्वास घोषित करने के लिए प्रेरित किया कि संपत्ति के मालिक पादरी के पास संस्कारों के अनुष्ठान करने का कोई अधिकार नहीं है। पादरी की यह आलोचना अंततः वाल्डेन्सियन हलकों में डोनटिज्म की धार्मिक स्थिति में विकसित हुई, एक विश्वास है कि नियुक्त चर्च अधिकारियों द्वारा दिए गए पवित्र संस्कार जो स्वयं अनैतिक जीवन जीते थे, वास्तव में अप्रभावी थे, अनैतिक कैथोलिक पादरियों द्वारा किए गए संस्कारों में भाग लेने वाले किसी भी व्यक्ति को कोई आध्यात्मिक मूल्य नहीं देते थे। अर्नोल्ड की मान्यताएँ लोम्बार्डी क्षेत्र के समुदायों के बीच बहुत लोकप्रिय थीं।

क्षेत्र के लोगों पर अपने प्रभाव के डर से, अर्नोल्ड को चर्च द्वारा विधर्मी करार दिया गया और 1155 में उसे जला दिया गया। हालाँकि, उसके विचारों की शक्ति जीवित रही, और उसने अनुयायियों का एक बड़ा और सुव्यवस्थित समूह छोड़ा जो 1180 के दशक में तब भी फल-फूल रहा था जब वाल्डो और उसका यात्रा साथी उनसे मिलने आए थे। अर्नोल्डिस्ट का मुख्य विश्वास बुनियादी गरीबी की स्थिति में एक शुद्ध इंजील जीवन जीने की वांछनीयता थी।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, उन्होंने खुद को और अपने दो से तीन परिवारों के छोटे समुदायों को संगठित किया, जिसमें प्रत्येक समुदाय का मुखिया एक बुजुर्ग था। बुजुर्गों और उनके समुदायों की देखरेख एक अधीक्षक द्वारा की जाती थी, जिसे बिशप भी कहा जाता था, जो मिलान में रहता था और क्षेत्र के छोटे सामुदायिक समूहों पर शासन करता था। मिलान में, लोम्बार्डी में एक सेमिनरी थी जहाँ प्रत्येक सांप्रदायिक समूह के नेताओं को बाइबल पढ़ने और व्याख्या करने का प्रशिक्षण मिलता था।

उनका धार्मिक मार्गदर्शन न्यू टेस्टामेंट तक ही सीमित था, जिसे सभी लोग स्थानीय भाषा में पढ़ते थे और अक्सर याद कर लेते थे। सुसमाचार की विषय-वस्तु और अर्थ की धार्मिक शिक्षा इन सांप्रदायिक समूहों में से प्रत्येक के भीतर एक प्रमुख कार्य था। ल्योन के गरीब और लोम्बार्डी के गरीब दोनों ने एक-दूसरे में समान विचारधारा वाले लोगों को पाया जिन्होंने गरीबी और सुसमाचार पर केंद्रित जीवन को अपनाया।

दोनों समूहों के शुरुआती दिनों में, उन्होंने कैथोलिक पादरियों और बिशपों से गरीबी के जीवन को सचेत रूप से स्वीकार करते हुए यीशु मसीह के अधिक वफादार प्रेषित बनने का आह्वान किया। हालाँकि, ल्योन के गरीबों और लोम्बार्डी के गरीबों के बीच कई मतभेद उभरे, खासकर वाल्डो के इस विश्वास के इर्द-गिर्द कि ल्योन के गरीबों के सभी अनुयायियों को सुसमाचार के घुमंतू प्रचारक के रूप में सेवा करनी थी। वाल्डो के अनुयायियों ने अपनी गरीबी में, अपने उपदेशों का समर्थन करने के लिए भिक्षा स्वीकार की, अपने शिष्यों को कुछ भी साथ न ले जाने के यीशु के आदेश की शाब्दिक व्याख्या को अपनाया।

वाल्डो का मानना था कि उपदेश देने का आह्वान उनके अनुयायियों की एकमात्र गतिविधि बनी रहनी चाहिए, और उन्होंने अपने अनुयायियों के लिए कोई अन्य व्यवसाय की अनुमति नहीं दी। परिणामस्वरूप, ल्योन के गरीब लोग भोजन, कपड़े और आश्रय की अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए श्रोताओं की उदारता पर निर्भर थे और उनके पास उपदेश देने के अलावा कोई अन्य व्यवसाय नहीं था। इसके विपरीत, लोम्बार्डी के गरीब लोग किसी व्यापार या पेशे में काम करते थे और अपनी कमाई को उदारतापूर्वक उस समुदाय के साथ साझा करते थे जिससे वे संबंधित थे, जिससे व्यक्तिगत संपत्ति के प्रति कम तीखा विरोध हुआ।

अर्नोल्डिस्टों ने मसीह द्वारा घोषित समुदाय में शिष्यत्व के समग्र नैतिकता और सिद्धांत को जीने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने अपने आह्वान की व्याख्या घुमंतू प्रचारकों के रूप में सेवा करने के लिए नहीं की। इसके बजाय, वे भौगोलिक रूप से अधिक निश्चित समुदायों के संग्रह से बने थे, जो परिवारों के छोटे समूहों के समूहों में संगठित थे, जो अपने समूहों में प्रत्येक परिवार के सदस्यों को धार्मिक और शास्त्र संबंधी शिक्षा प्रदान करने के लिए एक साथ बंधे थे।

शिक्षा पर इस जोर से स्कूलों की स्थापना हुई, जिन्हें लोम्बार्ड गरीबों द्वारा संचालित किया जाता था। लोम्बार्डी के गरीब, ल्योन के गरीबों की तरह, इस बात पर जोर देते थे कि अनुयायियों को बाइबल की नैतिकता से निर्देशित होना चाहिए क्योंकि वे दैनिक जीवन में लागू होते हैं। अर्नोल्डिस्टों को आत्मनिर्भर होना था, ईसाई सिद्धांतों को लागू करना था और अपने सांप्रदायिक समूहों के समर्थन में प्रत्येक समुदाय के सदस्य का श्रम लगाना था।

संक्षेप में, अर्नोल्डिस्टों ने अधिनियम 4 और 5 में पाए जाने वाले सामुदायिक जीवन के आदर्श वाक्य और नैतिकता पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि वाल्डो के अनुयायियों ने मैथ्यू 28 से सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाने के लिए यीशु के आह्वान पर अपने मंत्रालय को केंद्रित किया। आध्यात्मिक अनुशासन के रूप में श्रम का सवाल दोनों समूहों के बीच असहमति का एक प्रमुख

बिंदु था, जिसमें ल्योन के गरीबों ने मसीह के अनुयायी के जीवन में श्रम की भूमिका को अस्वीकार कर दिया था। मैनुअल श्रम का मुद्दा प्रतीकात्मक प्रतीत होता है।

यह वाल्डो की प्राचीन विरासत और लोम्बार्ड्स द्वारा विभिन्न परिस्थितियों और प्रभावों के लिए लगातार आविष्कारशील अनुकूलन के बीच कई तनावों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है। वाल्डो के अनुयायियों और अर्नोल्ड के अनुयायियों के बीच विलय के लिए कुछ सावधानीपूर्वक अध्ययन और बातचीत की आवश्यकता थी। दोनों समूहों के बीच नौ महत्वपूर्ण धार्मिक मतभेद उत्पन्न हुए, और प्रत्येक समूह के छह प्रतिनिधियों ने मतभेदों को दूर करने और समझौता करने के लिए एक साथ बैठक की।

वर्ष 1218 में अपने मतभेदों को सुलझाने के लिए बारह प्रतिनिधियों ने मिलान के पास बर्गामो शहर में कई दिनों तक बैठक की। उन नौ मतभेदों में से सात निम्नलिखित प्रश्नों में परिलक्षित होते हैं और तदनुसार एक दस्तावेज़ में हल किए गए थे जिसे रिस्क्रिप्टम कहा जाता है, जिसे बाद में बर्गामो की परिषद के रूप में जाना जाता है। नंबर एक, क्या इस आंदोलन के भीतर एक नेता का चुनाव किया जाना चाहिए? पिमोंटेस ने अंदर से एक नेता का चुनाव करने की मांग की, उसे अपना बिशप नियुक्त किया।

दूसरी ओर, वाल्डेस और उनके अनुयायी इस बात पर जोर देते रहे कि केवल मसीह ही आंदोलन का नेता है। नंबर दो, क्या नए धर्मांतरित लोगों में से चुने गए नेताओं को नियुक्त किया जाना चाहिए या नहीं? शिक्षा की एक प्रक्रिया और मानक उभर कर आया जिसने उन सभी को प्रशिक्षण प्रदान किया जो दोनों समूहों में आंदोलन के भीतर नेता या प्रचारक बनने के लिए तैयार थे। नंबर तीन, क्या लोम्बार्ड क्षेत्र में एक मेहनतकश पिमोंटी मण्डली, जिसने घुमंतू प्रचारकों को नियुक्त नहीं किया था, को सुसमाचार की घोषणा करने के लिए बुलाए गए आंदोलन के भीतर स्वीकार किया जा सकता था? वाल्डेस ने खुद समझौता करने से इनकार कर दिया, सुसमाचार प्रचार की प्राथमिक भूमिका पर अपने आग्रह पर जोर दिया, लेकिन 1206 या 1207 के आसपास उनकी मृत्यु के बाद, यह स्थिति मामूली रूप से बदल गई।

संयोग से, तीन पीढ़ियों के भीतर, आंदोलन के भीतर एक विपणन योग्य व्यापार की भूमिका हर घुमंतू मंत्री की पहचान का एक प्रमुख घटक साबित हुई। यात्रा करने वाले प्रचारकों के व्यवसाय या व्यापार ने उन्हें एक आवरण प्रदान किया, जिससे उनकी यात्राएँ गोपनीयता की आड़ में वैध हो गईं क्योंकि वे सैकड़ों वर्षों के दौरान समुदाय से समुदाय की यात्रा करते रहे, जब कैथोलिक चर्च ने हर ज्ञात वाल्डेन्सियन नेता को सताया। क्या बपतिस्मा किसी व्यक्ति के उद्धार के लिए प्रभावी और आवश्यक था? दोनों समूहों के बीच एक आम सहमति बनी कि जिसने संस्कार प्राप्त नहीं किया है, उसे बचाया नहीं जा सकता।

पांचवां, क्या विवाह को समाप्त किया जा सकता है या नहीं? पति और पत्नी को बेवफाई के मामले में या पति और पत्नी के बीच आपसी सहमति होने पर तलाक लेने की अनुमति दी जा सकती है। यह विवाह पर रोमन कैथोलिक चर्च की स्थिति से एक महत्वपूर्ण बदलाव था और वाल्डेन्सियन मान्यता को दर्शाता था कि विवाह एक संस्कार नहीं था। छठा, क्या प्रत्येक विश्वासी समुदाय को अपने उन सदस्यों के अनुशासन में शामिल होना चाहिए जो खुद अनैतिक व्यवहार में लिप्त हैं?

प्रत्येक आस्थावान समुदाय में एक न्यायाधिकरण स्थापित करने के लिए एक समझौता किया गया था, जिसे मामले-दर-मामला आधार पर समुदाय के सदस्यों को संबोधित करने और उनका न्याय करने का अधिकार होगा।

और सातवाँ, आस्था के समुदाय के जीवन में पवित्र बाइबल क्या भूमिका निभाती है? गरीब लोम्बार्ड्स का मानना था कि चर्च के लिए किसी भी ऐसी प्रथा या विश्वास को अस्वीकार करना आवश्यक है जो शास्त्रों में आधारित न हो। ये दोनों समूह सर्वसम्मति से सहमत थे कि बाइबल संदर्भ का अपरिवर्तनीय स्रोत है, जो आस्था और नैतिकता के मामलों पर एक निर्णायक अधिकार के रूप में कार्य करता है। ल्योन के गरीबों के बीच दो अनसुलझे मुद्दे बने हुए हैं, जिन्हें अल्ट्रामोंटेनेस या पहाड़ों से आने वाले लोग कहा जाता है, और लोम्बार्डों के गरीबों के बीच, जिन्हें पीडमोंटेस कहा जाता है।

वालडो और उसकी यात्रा साथी विवेक के भाग्य को लेकर पहला विवाद निम्नलिखित प्रश्न पर हुआ। जब वालडो और विवेक की मृत्यु हुई, तो क्या उनका उद्धार उनके द्वारा अंतिम समय में अपने पापों को स्वीकार करने पर निर्भर था या नहीं? पीडमोंटेस ने पापों को अंतिम समय में स्वीकार करने की आवश्यकता पर जोर दिया। अल्ट्रामोंटेनेस का मानना था कि मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करना ही उद्धार के उपहार के लिए आवश्यक था।

दूसरा विवाद सात संस्कारों के प्रशासन को लेकर हुआ। वालडो और अल्ट्रामोंटेनेस का मानना था कि संस्कार वैध थे, भले ही उन्हें करने वाले पुजारी नैतिक रूप से ईमानदार न हों, जबकि पीडमोंटेस का मानना था कि अनैतिक या अधर्मी पुजारियों द्वारा प्रशासित संस्कार पुजारी के अपवित्र चरित्र के कारण अप्रभावी हो जाते हैं। संयोग से, वाल्डेंसियन समुदाय के भीतर इस मुद्दे पर मतभेद तब तक अनसुलझे रहे जब तक कि वाल्डेंसियन 1532 में सुधार आंदोलन में शामिल नहीं हो गए।

1218 में बर्गामो की परिषद में, दोनों समूहों ने इन अंतिम दो मुद्दों को छोड़कर बाकी सभी पर समझौता कर लिया। चूँकि इन दो बिंदुओं को आस्था के आवश्यक सिद्धांतों के रूप में व्याख्यायित नहीं किया गया था, लियोन के गरीब और लोम्बार्डों के गरीब एक साथ मिल गए, जिससे दोनों समूहों की अखंडता से समझौता किए बिना आस्था की दोनों अभिव्यक्तियों की ताकत का संश्लेषण हुआ। जबकि वालडो के अनुयायियों ने मसीह में आस्था के केंद्रीय जोर के रूप में प्रचार के जुनून को प्रस्तुत किया, लोम्बार्डों के गरीबों ने दोनों समूहों के एकीकरण के लिए आवश्यक संगठन और संरचना लाई जिसने वाल्डेंसियन गवाह को रोमन कैथोलिक चर्च का विकल्प बनने में सक्षम बनाया।

1218 में बर्गामो की परिषद के बाद, लियोन के गरीब और लोम्बार्डों के गरीब एक हो गए और उन्हें मसीह के गरीब के रूप में जाना जाने लगा। अब जनता के पास ईसाई धर्म की दो अलग-अलग अभिव्यक्तियों के बीच चुनाव करने का विकल्प था। मसीह के गरीबों ने एक विश्वास की गवाही का प्रदर्शन किया जो ईसाई नेताओं द्वारा लोगों के प्यार और देखभाल के माध्यम से व्यक्त किया गया था जो स्वयं विनम्रता और सेवाभाव पर केंद्रित रहे।

वे ईसाई अनुयायी थे जिन्होंने आम लोगों की देखभाल और शिक्षा को अपना मुख्य मिशन बनाया। इसके विपरीत, रोमन कैथोलिक चर्च और उसके पादरी ने एक आस्था गवाह का मॉडल बनाया जिसका प्राथमिक लक्ष्य एक संस्थागत चर्च का समर्थन और उसके साथ संस्कारों का प्रशासन था। संस्थागत रोमन चर्च के पास शक्ति थी और उसके पक्ष में एक अत्यधिक विकसित प्रेरक अधिकार था।

परिणामस्वरूप, रोमन कैथोलिक चर्च ने हेरफेर, जबरदस्ती और निंदा के माध्यम से वाल्डेन्सियन समुदाय को नष्ट करने का प्रयास किया, पादरी और आम लोगों को इस विश्वास में प्रभावित किया कि केवल एक ही सच्चा चर्च था और वाल्डेन्सियन विधर्मी थे। इनक्विजिशन, धार्मिक धर्मयुद्ध और डोमिनिकन के उपदेशों के उपयोग ने यह मामला बनाया कि कैथोलिक चर्च ईश्वरीय न्याय का मध्यस्थ था। वाल्डेन्सियन विधर्मी के रूप में ब्रांडेड किए गए व्यक्तियों के प्रति निर्देशित कठोर दंडों के कारण, जिसमें संपत्ति की हानि, यातना और मृत्यु शामिल थी, वाल्डेन्सियन आंदोलन तेजी से अंदर की ओर मुड़ गया।

14वीं शताब्दी की शुरुआत तक, वाल्डेन्सियन असंतोष एक गुप्त संगठन बन गया था, जो अपने व्यक्तियों और अनुयायियों दोनों के लिए जीवित रहने के एकमात्र साधन के रूप में गोपनीयता का सहारा ले रहा था। संक्षेप में, 13वीं शताब्दी की शुरुआत में, वाल्डेन्सियन ने एक ऐसे चर्च के विकास को प्रोत्साहित किया जिसमें संस्थागत चर्च के मंत्रालय को पूरा करने में आम लोगों की बड़ी भूमिका थी, जबकि रोमन कैथोलिक पादरी उनके प्रयासों का विरोध करते थे और एक ऐसे समाज के भीतर अपने स्वयं के पदानुक्रम और अपने विशेषाधिकार प्राप्त पदों को बनाए रखने पर ध्यान केंद्रित करते थे जो कट्टरपंथी परिवर्तनों से गुजरना शुरू कर रहा था। मसीह के गरीबों द्वारा शुरू किए गए उन परिवर्तनों का पूरा प्रभाव ईसाई धर्म और जिसे हम प्रोटेस्टेंट सुधार के रूप में जानते हैं, पर आने में 300 साल और लगेंगे।

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक हैं जो वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपना व्याख्यान दे रहे हैं। यह सत्र 2 है, उद्देश्य का संश्लेषण, द अर्नोल्डिस्ट्स।